सेमेस्टर-6 हिन्दी-पत्रकारिता Core-14 (1)

2. प्रश्न: हिन्दी पत्रकारिता के महत्व को रेखांकित करें।

अथवा

डॉ० साकी अहमद अंसारी

पत्रकारिता के महत्व का वर्णन करें।

उत्तर — भारत की आज़ादी से पूर्व पत्रकारिता का स्वरूप सीमित था, साधन सीमित थे, लेकिन आदर्श बड़े थे। आज पत्रकारिता के साधन और स्वरूप असीमित हैं, लेकिन आदर्श अस्पष्ट। पत्रकारिता में हुए निरन्तर विकास ने, पत्रकारिता को एक व्यवसाय बना दिया है। आज़ादी से पूर्व पत्रकारिता का मिशन था गुलामी से मुक्ति। अधिकांश पत्र और पत्रकार इसी उद्देश्य को लेकर पत्रकारिता के साथ जुड़े थे। देश को आज़ाद कराने में पत्रकारिता के योगदान और उसकी महत्ता को नकारा नहीं जा सकता है। आज आज़ादी के वर्षों बाद पत्रकारिता को एक लक्ष्य सामने रखना है। वह है देश को मिली आज़ादी की नींव को मजबूत करने में योगदान देना। राष्ट्र निर्माण तथा राष्ट्रीय एकता को, गंगा-जमुनी संस्कृति को तथा देश की अखण्डता को बचाए रखना। पत्रकारिता के लिए केवल शैक्षणिक रूप से प्रौढ़ होना ही नहीं चारित्रिक दृढ़ता भी ज़रूरी है, जिसे किसी भी अध्याय में या स्कूल-कॉलेज में पढ़ाया नहीं जा सकता। यह भीतर की भावना है, जिसे खुद साँस लेते रहना है, क्योंकि पत्रकार होना किसी भी दूसरे पेशे की तुलना में कम अवर नहीं है।

पत्रकारिता एक अत्यंत गंभीर और उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है। इसे 'पेशा' भी कहा गया है, किन्तु यह पेशे से अधिक समाज-सेवा है। इसका संबंध जीवन और जगत से है। इसका मुख्य उद्देश्य है ऐसे स्वस्थ समाज की स्थापना और रचना जिसमें हर व्यक्ति स्वस्थ, प्रसन्न, स्वतंत्र और हर दृष्टि से सम्पन्न जीवन यापन कर सके। इसमें नवीनतम सामाजिक घटनाएँ महत्व रखती हैं। इन घटनाओं का संकलन, विश्लेषण, मूल्यांकन और संप्रेषण पत्रकारिता के अन्तर्गत

Scanned with CamScanner

आता है। अब हम पत्रकारिता के महत्व की चर्चा करते हैं-

1. मानव-समाज के क्रियाकलापों का लेखा-जोखा:

पत्रकारिता मानव-समाज के बीच जन्मी और मानव-समाज के अंदर ही स्वीकृत रचना-कर्म है। अतः इसके अन्तर्गत मानव-समाज के क्रिया-कलापों का लेखा-जोखा आता है। यानी इसके भीतर वे सारी बातें आ जाती हैं, जो समाज में घटित होती रहती हैं। मानव-समाज जटिल ताने-बाने से निर्मित है। मनुष्य के आपसी संबंध, तर्क-वितर्क, संघर्ष, जय-पराजय, प्राकृतिक अथवा मानव-निर्मित आपदाएँ, दुर्घटनाएँ, बेईमानी, भ्रष्टाचार, अच्छे-बुरे काम, वैज्ञानिक आविष्कार, कला-संस्कृति, साहित्य आदि के क्षेत्र में किए गए कार्य सबकुछ पत्रकारिता की सीमा में आता है। कहा जा सकता है कि पत्रकारिता सामाजिक जीवन की वह सीढ़ी है, जो सच-झूठ, शुभ-अशुभ और अच्छे-बुरे को दरवाजे तक पहुँचाती है। समाज में व्याप्त अंधकार, अंधविश्वास, रूढ़ियों, कुरीतियों, बुराइयों आदि को दूर करने के लिए पत्रकार अपनी लेखनी चलाता है, लेकिन वह तटस्थ रहकर निष्पक्ष भाव से यह काम करता है। उसका उद्देश्य होता है समाज को स्वस्थ दिशा मिल सके।

2. समाज का दिशा-दर्शन:

पत्रकारिता समाज को दिशा-निर्देश देने का भी काम करती है। यह बुराइयों को दूर कर समाज को सही दिशा की ओर बढ़ने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। वह इस तथ्य को खोलती है कि समाज में बुराई, वैमनस्य, सांप्रदायिकता, संकीर्णता, विद्रोह इत्यादि क्यों है? साथ ही पत्रकार इन तथ्यों के उद्घाटन के बीच इन स्थितियों पर टिप्पणी भी करता है कि इन बुराइयों से कैसे लड़ा जाए। वास्तव में एक

स्वस्थ समाज निर्माण में स्वस्थ पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। स्वस्थ पत्रकारिता ही समाज को स्वस्थ दिशा-निर्देश दे सकती है।

3. सामाजिक जागृति का माध्यम :

पत्रकारिता समाज का सच्चा प्रतिबिंब है। वह समाज में जागृति लाने का माध्यम है। हम देखते हैं कि समाचार पत्रों में उनके संपादक मंडल अपने नजरिये से लेख संपादकीय या लेख देते हैं। इन संपादकीयों और लेखों में की गई टिप्पणियाँ पाठकों को प्रेरणा प्रदान करती हैं और उनके मानस-पटल पर अच्छा प्रभाव छोड़ती हैं। इनको पढ़कर समाज में जागृति पैदा होती है। कई बार यह जागृति पाठकों के पत्रों में दिखाई देती है। अतः पत्रकारिता सामाजिक जागृति बेहतरीन उदाहरण है।

4. मानवीय गुणों और मानवीय मूल्यों का पोषण :

पत्रकारिता मानवीय गुणों के विकास में सहायक है। वह समाज में मानवीय मूल्यों का पोषण करती है। स्वतंत्रता, निर्भरता, परोपकार, करुणा, सदाचार इत्यादि की भावना का प्रचार-प्रसार समाचारपत्र, पत्रिकाओं तथा अन्य समाचार माध्यमों का उद्देश्य — असत्य पर सत्य की विजय दिखाना होता है। बुराई पर अच्छाई की विजय दिलाना होता है। इसलिए स्वाभाविक है कि पत्रकारिता पाठकों के भीतर श्रेष्ठ मानवीय गुणों का संचार करती है। मानव-मूल्यों को रोकती है। मनुष्य को प्रेरणा प्रदान करती है। और उसे कर्मशील बनाने की कोशिश करती है।

5. मनोरंजन : पत्रकारिता ज्ञान के प्रसार के साथ ही मनोरंजन का भी साधन है। लेकिन यह स्वस्थ मनोरंजन की पक्षधर है। मनोरंजन मनुष्य

के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना भोजन। ऐसे में पत्रकारिता
मानव-समाज को बहुत-सी ऐसी सामग्री परोसती है, जो
उसके मन को अच्छी लगती है। उसका मनोरंजन करती है।
उदाहरण के लिए फिल्मी दुनिया के समाचार, नाटक, हल्की-
फुल्की रचनाएँ, मनोरंजक समाचार, चुटकुले इत्यादि अनेक
तरह की सामग्री मनुष्य के मन को शांति प्रदान करते हैं।
कई विज्ञापन भी बहुत मनोरंजक होते हैं। अतः पत्रकारिता सूचना
और ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन का भी साधन है।

6. <u>ज्ञान-विज्ञान</u> : पत्रकारिता ज्ञान-विज्ञान का विश्वसनीय
सूचना माध्यम है। यह समाज को राजनीति, संस्कृति, कला, साहित्य, खेलकूद, सिनेमा,
विज्ञान, अपराध, अर्थ-जगत, वाणिज्य, ग्राम्य-विकास इत्यादि
विषयों से संबंधित नवीनतम सूचना, सामग्री और
उपलब्धियों आदि को संप्रेषित करती है। केवल
दुर्घटनाएँ ही पत्रकारिता की सीमा में नहीं आती, बल्कि
ज्ञान-विज्ञान की नवीनतम उपलब्धियाँ भी इसके अन्तर्गत
आती हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि पत्रकारिता की
अपनी महत्ता और उपादेयता है, लेकिन भारत की बदलती
पत्रकारिता के मौजूदा दौर में पत्रकारिता एक उद्योग
बन चुका है। अधिकतर अखबार और चैनल्स पूंजी-
पति घरानों के हाथ में हैं। लोगों तक पूरी सच्चाई
नहीं पहुँच रही है। आज मुख्यधारा की पत्रकारिता में
खोजबीन की कमी है। पत्रकारिता की महत्ता इसी में है कि
वह जनता को सही सूचना और समझ प्रदान करे।

—x—

डॉ० सफीउल्लाह अंसारी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग, करीम सिटी कॉलेज
जमशेदपुर, झारखण्ड-831001

POCO
SHOT ON POCO F1
Scanned with CamScanner